

अजोला हरित खाद के रूप में

Azolla as a Green Manure

अजोला जैव खाद का उपयोग भारत, चीन, बांग्लादेश, वियतनाम, फिलिपीन्स, श्रीलंका, और दक्षिण कोरिया आदि देशों में होता है। अजोला का उपयोग धान में जैविक खाद के रूप में होता है, किसानों के लिए अजोला रासायनिक उर्वरक का एक उपयोगी विकल्प हो सकता है। अजोला जैव खाद की तकनीक को अपनाने से रासायनिक नाइट्रोजन से निर्भरता को कम करने के साथ-साथ अधिक फसलो का उत्पादन, मृदा के पोषक तत्वों में सुधार एवं फसलो की उत्तम उपज प्राप्त की जा सकती है।

अजोला के उपयोग से लाभ

1	उच्चतम दर पर नाइट्रोजन का स्थिरीकरण
2	जैविक पदार्थों का कम समय में अधिक उत्पादन
3	पौधों में विटामिंस एवं होर्मोन्स का साव
4	भूमि की रासायनिक तथा भौतिक दशा में सुधार
5	पोटाश की उपलब्धता बढ़ाना
6	उर्वरको की क्षमता में सुधर
7	खरपतवार के नियंत्रण में सहयोग
8	मृदा (मिट्टी) की जल धारण क्षमता में सुधार
9	जिंक, मैगनीस,लोहा, और फाशफोरस आदि की प्रचुरता के कारण मृदा (मिट्टी) की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी, जो फसल की उपज के लिए गुणकारी होती है।

अजोला का उत्पादन

अजोला का उत्पादन छोटे आकर की क्यारी या तलाब बना कर, सीमेंट का टैंक एवं पोलिथीन से ढाका हुआ गड्ढा बनाकर, मिट्टी के गमलो में, प्लास्टिक के टब में किया जा सकता है।

अजोला का खेत में प्रयोग

अजोला का प्रयोग हरी खाद के रूप में –

ताज़ा अजोला दस टन प्रति हैक्टेयर की दर से उपयोग करना चाहिए यद्यपि अजोला उपलब्धता के अनुसार इसकी मात्राको घटा और बढ़ा सकते हैं। इसके लिए अजोला को अलग खेत में उगाना पड़ता है। और रोपाई से पूर्व खेत की तैयारी के समय मिट्टी में

मिलाते हैं | इसके उत्पादन के लिए नर्सरी में 25-50 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर पर सिंगल सुपर फास्फेटकी मात्रा दो भाग में देना चाहिए | कीटनाशको का उपयोग आवश्यकता अनुसार कर सकते हैं| अजोला के उपयोग करने से धान की फसल को 20 से 40 किलोग्राम नाइट्रोजन की मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से प्राप्त की जा सकती है।

धान के साथ उगाना –

इस विधि द्वारा अजोला और धान को एक साथ उगाते हैं धान की पौधा की रोपाई के 2 - 3 दिन के बाद 0.5 से 1.0 टन प्रति हैक्टेयर की दर से अजोला का टीका देते हैं | अधिक उत्पादन के लिए मुख्य फसल की खुराक के अनुसार रासायनिक नाइट्रोजन व फास्फोरस देना आवश्यक है | अजोला की मोटी परत 15 से 20 दिन में तैयार हो जाती है इसके बाद अजोला विघटित होकर नाइट्रोजन प्रदान करता है और इसका जैव पदार्थ मृदा में विघटित हो जाता है | इस विधि से औसतन 30 kg/ हैक्टेयर नाइट्रोजनप्राप्त होता है।

लाभकारी अजोला –

अजोला की कुछ प्रजातिया 45 डिग्री सेल्सियस तापक्रम तक जीवित रहता है। अजोला की वृद्धि के लिए प्रकाश की अति आवश्यकता होती है लेकिन अधिक गर्मी के मौसम में यह छाया में उचित वृद्धि करता है। अजोला जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण द्वारा नाइट्रोजन प्रदान करने का एक सस्ता श्रोत है |जिससे धान की पैदावर में अच्छी वृद्धि होती है |अजोला मृदा की उर्वरता को लम्बे समय तक बनाये रखने में मदद कर सकता है | इसके उपयोग से रासायनिक नाइट्रोजन पर निर्भरता आंशिक रूप से कम कर सकते हैं और फसलोत्पादन बढ़ने के साथ - साथ स्वच्छ वातावरण भी बनाये रखा जा सकता है |

